Training on concept of Soil Moisture Conservation and its Importance in Forestry

मृदा नमी संरक्षण की अवधारणा एवं वानिकी में इसके महत्व पर प्र शक्षण

दिनांक 05/08/2026 से 07/08/2026

तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिनांक 05/08/2026 से दिनांक 07/08/2026 तक राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की वनप्रबंधन प्रभाग द्वारा श्री प्रदीप वासुदेवा भा.व.से. संचालक रा.व.अ.सं. जबलपुर एवं श्री संदीप फैलोज़ उपसंचालक के मार्गदर्शन में आयोजित किये गये है। जिसमें दिनांक 05 से 07 अगस्त 2026 तक मृदा एवं नमी संरक्षण विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें पश्चिम बैतूल, दक्षिण पन्ना, भोपाल, दतिया, उत्तर सागर, दक्षिण शहडोल, देवास, बुरहानपुर एवं दक्षिण छिंदवाड़ा वनमंडलों से वन परिक्षेत्र अधिकारी, वनपाल एवं वनरक्षक सहित कुल 44 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर संस्थान के संचालक श्री प्रदीप वासुदेवा (भा.व.से.) ने कहा कि मृदा एवं जल संरक्षण स्वस्थ, टिकाऊ एवं प्रभावी वन प्रबंधन के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्रशिक्षण के दौरान विषय विशेषज्ञों द्वारा मृदा स्वास्थ्य, जल संरक्षण एवं वर्षा जल के बेहतर प्रबंधन से संबंधित विभिन्न तकनीकी विषयों पर व्याख्यान एवं प्रस्तुतियाँ दी गईं।

श्री के. एल. कावरे (सेवानिवृत्त ए.सी.एफ.), श्री राघवेन्द्र बिसेन (सेवानिवृत्त ए.सी.एफ.) एवं श्री एस. के. जैन (सेवानिवृत्त ए.सी.एफ.), डॉ. यशपाल सिंह, सहायक प्राध्यापक, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, डॉ. रोहित पाण्डेय, सहायक प्राध्यापक, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर तथा डॉ. विजय बघारे, एच.ओ.डी. (वानिकी विभाग), मंगलायतन विश्वविद्यालय, जबलपुर ने पावर पॉइंट प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रतिभागियों को मृदा नमी संरक्षण एवं जल संवर्धन की विभिन्न तकनीकों की जानकारी दी।

प्रशिक्षण के अंतर्गत वन परिक्षेत्र कुण्डम के क्षेत्र भ्रमण के दौरान गेबियन स्ट्रक्चर, परकोलेशन टैंक एवं बोल्डर चेक डैम जैसी मृदा एवं नमी संरक्षण संरचनाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन कराया गया। इस क्षेत्र भ्रमण से प्रतिभागियों को इन संरचनाओं के निर्माण, उपयोगिता एवं वन क्षेत्रों में वर्षाजल संरक्षण के व्यावहारिक पहलुओं की जानकारी प्राप्त हुई।

TRAINING ON CONCEPT OF
SOIL MOISTURE CONSERVATION AND
ITS IMPORTANCE IN FORESTRY

TRAINING ON CONCEPT OF
SOIL MOISTURE CONSERVATION AND
ITS IMPORTANCE IN FORESTRY

राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर

एसएफआरआइ में मृदा-जल संरक्षण तकनीक पर कार्यशाला

कंटूर ट्रेंच, बोल्डर चेक जैसी संरचनाएं मिट्टी का कटाव रोकने में हैं सहायक

09 डिविजन के वन संरक्षक, वनपाल, गार्ड समेत 45 प्रशिणार्थी शामिल रहे | **63** डिविजन में से 47 डिविजन के प्रशिणार्थियों को अब तक दिया गया प्रशिक्षण | **193** ने अब तक लिया प्रशिक्षण, मृदा के कटाव जलसंरक्षण के करेंगे उपाय | **03** अंतिम दिन कुंडम वन परिक्षेत्र में भ्रमण कर तकनीक देखेंगे

नईदुनिया प्रतिनिधि, जबलपुर : जंगल और पानी को संरक्षित रखने विज्ञानियों का मंथन जारी है। बारिश के कारण हो रहे मिट्टी के कटाव से जहां बारिश का पानी रुक नहीं रहा, वहीं इससे जंगल भी प्रभावित हो रहे हैं। यदि इस पर अभी ध्यान नहीं दिया तो भविष्य में ये खतरे का संकेत बन सकते हैं। इसी ध्येय के साथ मध्य प्रदेश राज्य वन अनुसंधान संस्थान में तीन दिवसीय 'मृदा एवं जल संरक्षण प्रशिक्षण' आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षण के दूसरे दिन जबलपुर सहित संभाग भर के वनमंडलों से आए अधिकारी-कर्मचारियों व मैदानी अमले को विषय विशेषज्ञों ने मृदा-जल संरक्षण के व्यावहारिक और तकनीकी गुर बताए।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान में मृदा-जल संरक्षण तकनीक पर कार्यशाला में शामिल संभाग के वन अधिकारी। ● नईदुनिया

जल-जंगल बचाने संरचानाओं पर जोर: कार्यशाला में वन प्रबंधन प्रभाग की प्रभारी डा. प्रतीक्षा चतुर्वेदी, मुख्य वक्ता रिटायर्ड सहायक वन संरक्षक केएल कांवरे और राघवेंद्र बिसेन ने प्रतिभागियों को समोच्च खंदक (कंटूर ट्रेंच) तकनीक, चेक डैम, बोल्डर डैम सहित अन्य तकनीकों संरचनाओं को विस्तार से बताया कि इन संरचनाओं से मिट्टी के कटाव को रोका जा सकता है। वहीं जल का संरक्षण किया जा सकता है। इन तकनीकों से पहाड़ियों और ढलानों पर समोच्च रेखाओं के साथ खंदक खोदना है ताकि वर्षा का पानी सीधे बहे नहीं और जमीन के अंदर सोख लिया जाए। जल प्रवाह की गति को धीमा करने और मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए स्थानीय पत्थरों या झाड़ियों से छोटे अवरोध बनाना भी कारगर उपाय है।

बोल्डर चेक जैसी छोटी और सस्ती संरचनाओं पर बल दिया गया। विशेषज्ञों ने मृदा नमी संरक्षण, वर्षा जल संचयन, जलग्रहण क्षेत्र विकास, टिकाऊ वन प्रबंधन की उन्नत तकनीक बताई। तकनीकी संवाद व प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों को मैदानी स्तर पर आने वाली चुनौतियों के व्यावहारिक समाधान बताए गए।

प्रतिभागियों को संरचनाएं बनाने का तरीका बताते विशेषज्ञ। ● नईदुनिया

नौ डिवीजन के रेंजर से लेकर बीट गार्ड तक शामिल

- कार्यशाला में बैतूल, दक्षिण पन्ना, दतिया, उत्तर सागर, दक्षिण शहडोल, देवास, बुरहानपुर और दक्षिण छिंदवाड़ा और कटनी वनमंडलों से आए वनपाल और वनरक्षक प्रशिक्षण में शामिल हैं।
- शुक्रवार को कार्यशाला के अंतिम दिन प्रतिभागियों को कुंडम वन परिक्षेत्र का भ्रमण कराते हुए मृदा व जलसंरक्षण के लिए तैयार संरचनाओं से अवगत कराया जाएगा

इन तकनीकों से मिट्टी का कटाव रोकने, जंगल बढ़ाने पर जोर

- **कंटूर ट्रेंच**-पहाड़ियों और ढलानों पर समोच्च रेखाओं के साथ खंदक खोदना ताकि वर्षा का पानी सीधे बहे नहीं और जमीन के अंदर सोख लिया जाए
- **चेक डैम**-जल प्रवाह की गति को धीमा करने और मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए स्थानीय पत्थरों या झाड़ियों से छोटे अवरोध बनाना
- **बोल्डर चेक**-पानी और मिट्टी को बचाने के लिए नालों या छोटी धाराओं में पत्थरों से बनाई जाने वाली एक छोटी और सस्ती संरचना है। यह पानी के बहाव को धीमा करती है, मिट्टी का कटाव रोकती है और भूजल स्तर को बढ़ाने में मदद करती है।
- **जैव-पारिस्थितिकी पुनरुद्धार**-डिग्रेडेड लैंड और खदान क्षेत्रों में मिट्टी की उर्वरता सुधारने के लिए जैव-उर्वरकों का उपयोग करना

जबलपुर, गुरुवार, 06 अगस्त, 2026

नईदुनिया सिटी

जबलपुर

छोटे प्रयास भी पर्यावरण संरक्षण में सहायक IV

पेज 3

पुराने व नए फिल्मी गीतों का लिया आनंद

www.naidunia.com

शुभ प्रभात

शहर की वायु गुणवत्ता

	एक्यूआइ	पीएम-10	पीएम-2.5
गुप्तेश्वर	97 (संतोषजनक)	75	61
मढ़ाताल	81 (संतोषजनक)	62	52
सुहागी	62 (संतोषजनक)	51	31

(यूनिट : माइक्रो ग्राम/घनमीटर)

पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने में मृदा और जल की भूमिका महत्वपूर्ण

एसएफआरआइ में तीन दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ, जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने पर रहा जोर

नईदुनिया प्रतिनिधि, जबलपुर: बदलते जलवायु परिदृश्य, घटते जल स्रोत और भूमि क्षरण जैसी चुनौतियों के बीच वन संरक्षण को अधिक प्रभावी और टिकाऊ बनाने की दिशा में मध्य प्रदेश राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने नई पहल की है। संस्थान में बुधवार से मृदा एवं जल संरक्षण की वैज्ञानिक तकनीकों तथा वानिकी में उनके व्यावहारिक उपयोग पर केंद्रित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के संचालक प्रदीप वासुदेव ने किया। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों का वैज्ञानिक प्रबंधन ही भविष्य के समृद्ध और टिकाऊ वनों की आधारशिला है। स्वस्थ वन पारिस्थितिकी तंत्र, जैव विविधता के संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने में मृदा एवं जल की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्रतिभागियों से स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप आधुनिक संरक्षण तकनीकों को अपनाकर अपने-अपने कार्यक्षेत्र में प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने का आह्वान किया।

मप्र राज्य वन अनुसंधान में मृदा और जल संरक्षण की विज्ञानी तकनीकों पर प्रशिक्षण अवसर पर उपस्थित विशेषज्ञ। ● सौजन्य संस्थान

प्रशिक्षण के पहले दिन आयोजित तकनीकी सत्रों में मृदा संरक्षण, जलग्रहण क्षेत्र विकास, वर्षा जल संचयन और वैज्ञानिक वन प्रबंधन की नवीनतम अवधारणाओं पर विस्तार से चर्चा हुई। विशेषज्ञों ने बताया कि छोटे स्तर पर किए गए संरक्षण कार्य भी लंबे समय में जल उपलब्धता बढ़ाने, मिट्टी के कटाव को रोकने और वन क्षेत्रों की उत्पादकता सुधारने में अहम भूमिका निभाते हैं। कार्यशाला में सेवानिवृत्त एसीएफ केएल कावरे, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के डा. यशपाल सिंह तथा रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के डा. रोहित पांडेय ने अपने अनुभव साझा करते हुए सफल संरक्षण माडल प्रस्तुत किए। विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों के प्रश्नों के उत्तर देकर वैज्ञानिक तकनीकों के व्यवहारिक पक्ष को भी स्पष्ट किया।

वनमंडलों से पहुंचे वन अधिकारी और मैदानी अमला

प्रशिक्षण में बैतूल, दक्षिण पन्ना, दतिया, उत्तर सागर, दक्षिण शहडोल, देवास, बुरहानपुर और दक्षिण छिंदवाड़ा वनमंडलों से आए वनपरिक्षेत्र अधिकारी, वनपाल और वनरक्षक भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम का उद्देश्य उन्हें मृदा नमी संरक्षण, जल संवर्धन और आधुनिक वन प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों से प्रशिक्षित करना है, ताकि इन उपायों को जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू कर प्रदेश के वन क्षेत्रों को अधिक समृद्ध, सुरक्षित और टिकाऊ बनाया जा सके। कार्यक्रम में वन प्रबंधन प्रभाग की प्रभारी डा. प्रतीक्षा चतुर्वेदी, एसएस रघुवंशी, विनय कुमार कोरी, डा. डीके कुलदीप, सत्यम सक्सेना, अजय लविस्कर, प्रियंका वर्मा, सोनल चतुर्वेदी सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।